वर्जित संबंध

नोबेल साहित्य में

विजय शर्मा

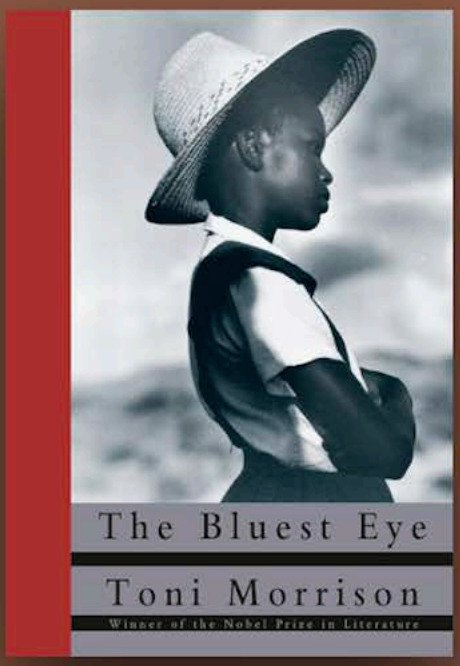

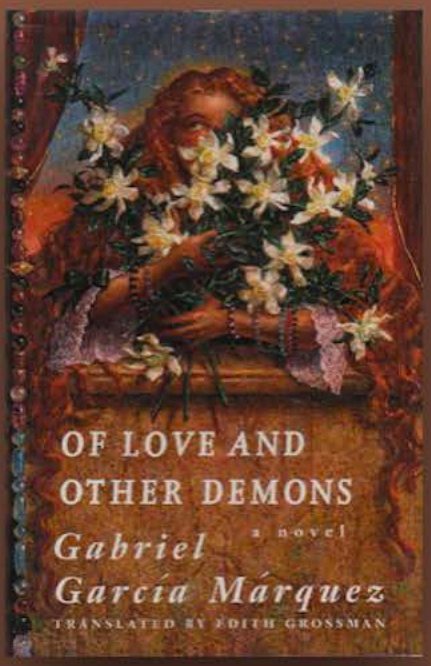

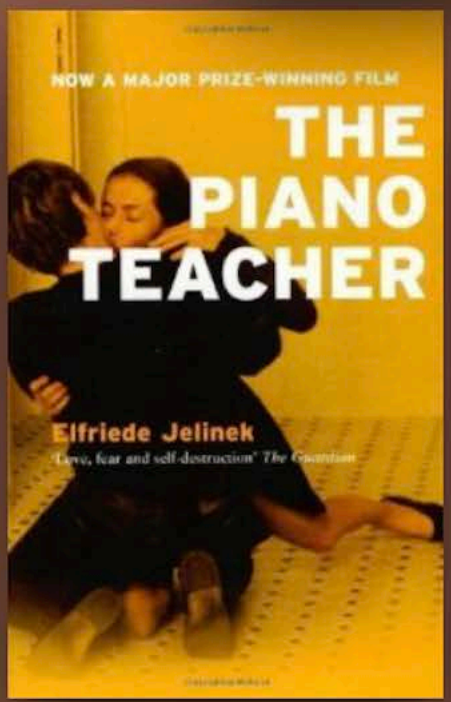

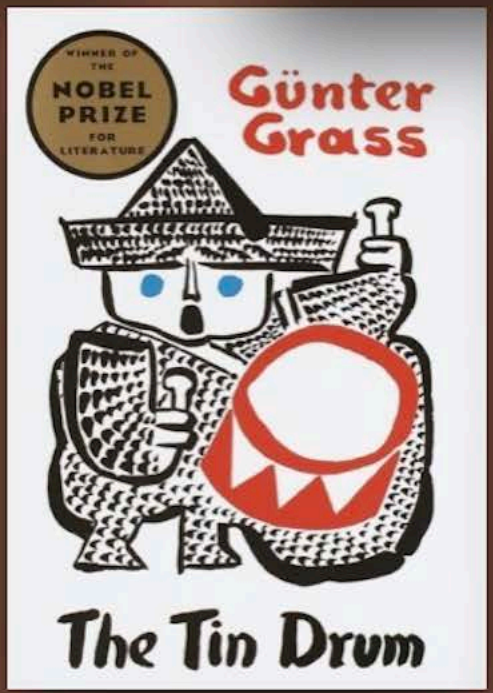

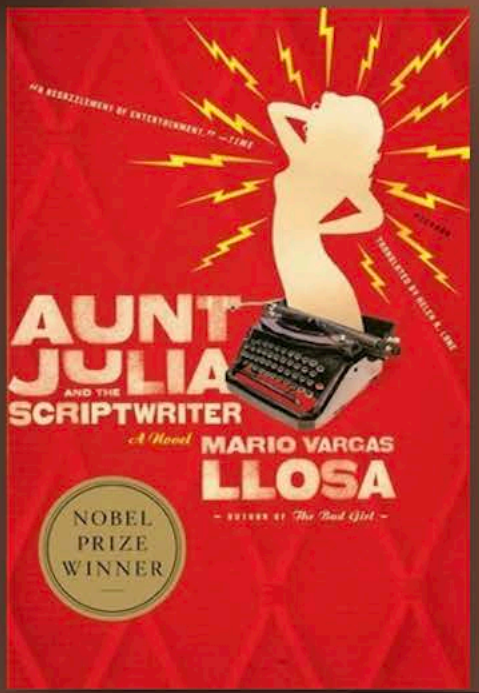

वर्जित संबंध

नोबेल साहित्य में

विजय शर्मा

प्रकाशक: नॉटनल

प्रकाशन: जुलाई, 2025

© विजय शर्मा

चालीस दिन के भीतर जाने वाले छः परिवारजन को समर्पित

अनुक्रम

अपनी बात	4
प्रेम विहीन प्रेम में मरते लोग	19
द ब्लूएस्ट आई : पीड़ा की इंतहा	102
नाज़ी विकृति की मुनादी: टिन ड्रम	185
अस्वस्थ व्यक्ति का विकृत संबंध	269
क्रेजी प्यार, क्रेजी लोग	351

अपनी बात

नोबेल साहित्य में वर्जित संबंध

उपन्यासकार के भीतर खुद को व्यक्त करने की एक बेचैनी होती है, एक छटपटाहट होती है। वे अपनी बेचैनी को अलग-अलग रंग, ढंग और शैली में प्रस्तुत करते हैं। लेखक प्रश्न खड़े करता है, अत: वह सबकी आँख में खटकता है। ग्रास और येलेनिक दोनों द्वितीय विश्वयुद्ध में अपने देश की भूमिका, अपने देश के अतीत पर प्रश्न उठाते हैं। दोनों अपने देश के वर्तमान पर प्रश्न खड़े करते हैं। टोनी मॉरीसन भी यही कर रही हैं और मार्केस भी। लोसा राजनैतिक विचार केवल लेख में व्यक्त करते हैं, जबकि ग्रास अपने उपन्यास और लेख दोनों में इसे अभिव्यक्त करते हैं। टोनी मॉरीसन सामाजिक सक्रिय आंदोलनकारी बन सकती थीं। पर उन्होंने लेखक बनना तय किया। क्योंकि यही उनका स्वधर्म था। वे पिछली सदी के साठ के दशक के अंत में अमेरिका के सामाजिक-सांस्कृतिक परिवेश की बात करती हैं। जहाँ समाज बँटा हुआ था। अमेरिकी समाज श्वेत-अश्वेत के द्वैत में फ़ँसा हुआ था। उनका उपन्यास 'द ब्लूएस्ट आई' अमेरिकन साहित्यिक लेगेसी है।

इस पुस्तक 'वर्जित संबंध: नोबेल साहित्य में' में विवेच्य पाँचों उपन्यास ('ऑफ़ लव एंड अदर डीमन्स', 'द ब्लूएस्ट आई', 'द टिन ड्रम', 'द पियानो टीचर' एवं 'ऑन्ट जूलिया एंड द स्क्रिप्टराइटर') मानवता के श्याम पक्ष खोल को कर दिखाते हैं।

उपन्यास के पात्रों की दिनचर्या, उसके सुख-दुख और उसके इतिहास-वर्तमान से पाठक का नाता नहीं होता है, यह नाता उपन्यासकार बनाता है। वह पात्र आपको अपना-सा लगने लगता है और उससे आपका संबंध बढता चला जाता है। पाठक के रूप में आप उसकी सच्ची या झूठी कहानी में दिलचस्पी लेने लगते हैं। रचनाकार अपने पात्र को विश्वसनीय बनाता है। इसके लिए उपन्यासकार अपने ही जीवन और आस-पास से पात्र उठाता है। कह सकते हैं, उपन्यासकार धीरे-धीरे पाठक को कल्पना स्वीकारने के लिए तैयार करता है। विवेच्य उपन्यासकारों ने यह किया है।

उपन्यास गहन सामूहिक अवचेतन को वाणी देता है, उसे चरितार्थ करता है। औपन्यासिक यथार्थ या कहें सच अक्सर निर्मित किया गया लग सकता है। पहले ही कह चुकी हूँ, सच और झूठ का घालमेल करके लेखक उपन्यास और उसके पात्रों को विश्वसनीय बनाता है और चालाकी से काम करता है। लेकिन यह चालाकी कितनी क़ामयाब है, यह सिर्फ पाठक की नज़र में विश्वसनीय बनने से तय नहीं होगी। अपनी आत्मकथा में भीष्म साहनी 'तमस' की रचना-प्रक्रिया पर बात करते हुए लिखते हैं- 'उपन्यास के आरम्भ में सूअर मारने का प्रसंग काल्पनिक है। उपन्यास की सच्चाई के मानदण्ड इस बात पर निर्भर नहीं होते कि अमुक घटना वास्तव में घटी थी या नहीं, बल्कि इस बात पर कि जीवन के समूचे यथार्थ के परिप्रेक्ष्य में वह घटना विश्वसनीय बन पाई है कि नहीं।' हम देखते हैं कि विभाजन के आख्यान में 'तमस' अंतत: